

Bihar Board Class 7 Social Science Geography Solutions

Chapter 3 आंतरिक बल एवं उससे बनने वाली भू-आकृतियाँ

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न (क)

भूकंप के झटके क्यों आते हैं ?

उत्तर-

पृथ्वी के अन्दर गतिमान प्लेटों के टकराने से भूकंप के झटके आते

प्रश्न (ख)

भूकम्प का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर-

भूकम्प का मानव जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। छोटे-बड़े मकान ध्वस्त हो जाते हैं। बहुत-से आदमी उसके मलबे में दब जाते हैं। इस प्रकार भारी जानमाल की हानि होती है।

प्रश्न (ग)

ज्वालामुखी किसे कहते हैं ?

उत्तर-

कभी-कभी और कहीं-कहीं पृथ्वी के अन्दर से तरल अग्नि की। ज्वाला निकलने लगती है, उसी को ज्वालामुखी कहते हैं।

प्रश्न (घ)

ज्वालामुखी ने मानव जीवन को प्रभावित किया है, कैसे?

उत्तर-

पहले तो ज्वालामुखी ने अपने लपेटे में मनुष्य को तो लिया ही, उसके खेत-खलिहान और बाग-बगीचों को जला डाला। जहाँ ज्वालामुखी मृत हो गई और निकला लावा ठंडा हो गया वहाँ मनुष्य को उपजाऊ जमीन मिल गई। इस प्रकार मानव जीवन कुप्रभावित हुआ तो लाभवित भी हुआ

प्रश्न (ङ)

पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के परिणाम स्वरूप निर्मित होनेवाली स्थलाकृतियाँ कौन-कौन सी हैं ? वर्णन कीजिए।

उत्तर-

पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के परिणामस्वरूप निर्मित होने वाली स्थलाकृतियाँ अनेक हैं। ज्वालामुखी पर्वत पृथ्वी की आंतरिक शक्ति का परिणाम है। वैसे ही पृथ्वी की आंतरिक शक्ति से पहाड़ बनते हैं, पहाड़ियाँ बनती हैं और पठार बनते हैं। पठारों पर भी पहाड़ियाँ दिख जाती हैं।

प्रश्न (च)

मोड़दार एवं संचयन पर्वतों में क्या भिन्नता है एवं क्या समानता है ?

उत्तर-

धरातलीय भाग पर उत्पन्न दबाव के कारण जब मोड़ पड़ता है तो वह भाग ऊपर उठ जाता है और मोड़दार पर्वत का रूप धारण कर लेता है। इसके विपरीत ज्वालामुखी से निकले मैग्मा और लावा जब काफी मात्रा

में एकत्र हो जाते हैं तब कालक्रम में ठंडा होकर संचयित पर्वत बन जाते हैं। दोनों पर्वत ऊंचे होते हैं। लेकिन मोड़दार पर्वत काफी ऊंचे होते हैं, जिससे उनपर बर्फ जम जाती है, लेकिन संचयन पर्वत उतने ऊंचे नहीं होते जिससे उनपर बर्फ नहीं जमती। समानता यह है कि दोनों को पर्वत ही कहा जाता है।

प्रश्न (छ)

पर्वत और पठार में क्या अंतर है?

उत्तर-

पर्वत और पठार में यह अंतर है कि पर्वत की ऊँचाई धीरे-धीरे बढ़ती है और ऊपर बहुत कम बराबर स्थान होता है जबकि पठार की ऊँचाई अकस्मात बढ़ती है और ऊपर काफी बराबर स्थान रहता है। पहाड़ों पर बर्फ जमती है, लेकिन पठारों पर खनिज मिलते हैं।

प्रश्न (ज)

पर्वत के प्रकारों का उदाहरण के साथ वर्णन कीजिए।

उत्तर-

पर्वत चार प्रकार के होते हैं :

1. वलित पर्वत
2. भ्रंशोत्थ पर्वत
3. संचयन पर्वत तथा
4. अवशिष्ट पर्वत

1. वलित पर्वत-धरातलीय भाग पर उत्पन्न दाब के कारण चट्टानों में बल पड़ने लगते हैं। इससे वहाँ की धरातल ऊपर उठ जाता है और वलित पर्वत बनता है। उदाहरण में एशिया का हिमालय, यूरोप का रॉकी।

2. भ्रंशोत्थ पर्वत-धरातल पर कहीं और कभी समांतर भ्रंश के बाद बीच का भाग ऊपर उठा रह जाता है और पर्वत-सा दिखने लगता है। ऐसे ही पर्वत को भ्रंशोत्थ पर्वत कहते हैं। जैसे यूरोप का ब्लैक फॉरेस्ट और भारत का विन्ध्याचल।

3. संचयन पर्वत-ज्वालामुखी द्वारा निकले लावा ठंडा होकर संचित होते जाते हैं। कालक्रम में इस संचित लावा का ढेर लग जाता है और पर्वत बन जाता है। इसी को संचयन पर्वत कहते हैं। जैसे जापान का फ्यूजियामा तथा अफ्रिका का किलोमंजारो।

4. अवशिष्ट पर्वत-हवा, वर्षा, बर्फबारी आदि अपरदन की शक्तियों द्वारा पर्वत की चोटी कटती-छंटती तथा घिसती रहती है। इससे इसकी ऊँचाई बहुत कम हो जाती है। उदाहरण है अरावली, पूर्वी और पश्चिमी घाट पर्वत।

प्रश्न (झ)

पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के क्या-क्या प्रभाव नजर आते हैं?

उत्तर-

पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के निम्नलिखित प्रभाव नजर आते हैं :

1. भूकम्प,
2. ज्वालामुखी तथा
3. विभिन्न प्रकार के पर्वतों का बनना ।

प्रश्न (ज)

भूकम्प से सर्वाधिक नुकसान कब एवं कहाँ होता है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

भूकम्प से सर्वाधिक नुकसान तब होता है जब वहाँ के बासिन्दे लापरवाह रहते हैं। पुनः भूकम्प का अधिक नुकसान वहाँ होता है जहाँ के मकान भूकम्परोधी नहीं बने होते ।

प्रश्न (ट)

भूकम्प से होनेवाली क्षति से हम कैसे बच सकते हैं?

उत्तर-

भूकम्प से होनेवाली क्षति से हम तभी बच सकते हैं जब नागरिकों को इससे बचने के उपायों से अवगत कराये । जो भी भवन बनें, उनको " वैज्ञानिक ढंग से भूकम्परोधी बनाया जाय । इससे भूकम्प से होनेवाली क्षति को कम किया जा सकता है या क्षति से बचा जा सकता है।

प्रश्न (ठ)

पठार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर-

पठार निम्नलिखित छः प्रकार के होते हैं :

1. महाद्वीपीय पठार
2. वायूढ निक्षेप पठार
3. हिमनदीय निक्षेपण पठार
4. लावा निर्मित पठार
5. अंतरपर्वतीय पठार तथा
6. गिरिपद पठार

प्रश्न 2.

निम्नलिखित को स्पष्ट कीजिए :

1. अधिकेन्द्र
2. उद्गम केन्द्र
3. सिस्मोग्राफ तथा
4. रिक्टर स्केल ।

उत्तर-

1. अधिकेन्द्र-पृथ्वी के ऊपर उद्गम क्षेत्र के ठीक सामने का भाग अधिकेन्द्र कहलाता है। भूकम्प का अधिक कुप्रभाव अधिकेन्द्र के पास ही होता है और उसके चारों ओर क्रमशः कम होते जाता है।
2. उद्गम केन्द्र-पृथ्वी के अन्दर का वह भाग, जहाँ से भूकम्प प्रारम्भ होता है उस भाग को 'उद्गम केन्द्र' कहते हैं। तात्पर्य कि उद्गम केन्द्र तथा अधिकेन्द्र ठीक आमने-सामने होते हैं।
3. सिस्मोग्राफ-भूकम्प की तीव्रता मापने वाले यंत्र को 'सिस्मोग्राफ' कहते हैं। सिस्मोग्राफ रिक्टर पैमाने का बना होता है।
4. रिक्टर पैमाना-जिस पैमाने में भूकम्प की तीव्रता को मापते हैं उस पैमाने को 'रिक्टर पैमाना' कहते हैं। सिस्मोग्राफ का पमान 'रिक्टर' ही होता है।